

M. T. R. COLLEGE, SURAT
Manuscripts Library

No. ^{Ref.}
_{Seq.} 1026

Title: *Ganuid Damodhar*
Stotra

Complete

1026

C	:	Gandhi	:	Damodar Stokes	:	Title
:	:	:	:	Bilva Mangol	:	Author
:	:	:	:	:	:	Editor
Slc	:	:	:	:	:	Year, Vols.
:	:	:	:	:	:	Publisher
1026	:	:	:	:	:	Remarks

॥श्री॥

॥श्रीगणेशायनमः॥ अग्रेकुरुणा
॥मथपांडवानादुः शासनेनाहत
॥वस्त्रकेशा॥ कृष्णातदाक्रोशद
॥नन्यनाथागाविंददामोदरमाध
॥वेति॥१॥ श्रीकृष्णविष्णोर्मधुकै
॥दभारेभक्तानुकंपिष्मगवन्मुरा
॥रे॥ त्रायस्वमां केशवलोकनाथ
॥गोविंद॥२॥ विक्नेतुकामाकि
॥लगोपकन्यामुरारिपादापित
॥चित्तरतिः॥ दध्यादिकंमोहव
॥शादवोचकगोविंद॥४॥ उल्लख

॥ लेसंभृततंडुलाश्च संघट्ट
॥ यंत्यो मुशैश्च मुग्धाः ॥ गायं
॥ तिगोप्यो जनितानुरागा गोविं
॥ दं ॥ ४ ॥ काचित्करां भोजपुटे
॥ निषण्णं क्रीडाभुक्तं किंभुकरक्त
॥ तुंडं ॥ अभ्यासयामास सरोत्त
॥ हाक्षी गोविंद ॥ ५ ॥ गृहे गृहे गो
॥ पवधुसहः प्रतिक्षणं पंज
॥ रसारिकाणां ॥ स्त्रिंशत्किंवा
॥ चयितुं प्रवृत्तो गोविंद ॥ ६ ॥
॥ पय्यं ककाभाजमलंकुमारं प्र
॥ स्वापयं लोकिलगोपकन्या ॥ ज
॥ गुः प्रबंधं स्वरतालबंधे जेविं ॥

॥ रामानुजैषी क्षणकेलिलोलंगो
॥ पीरहीत्वानवनीतिवौरं ॥ अ
॥ बालकंबालकमाजुहावगोविं
॥ द० ॥ ८ ॥ विचित्रवस्त्राभरणभि
॥ रामंविधायवक्रामुजराजहंसी
॥ सदामदीयेरसानाग्ररंगेगोविं
॥ द० ॥ ९ ॥ अंकुधिरूढं शिशुगोप
॥ गूढं स्ननंधयंतं कमलैककांतं ॥
॥ संबोधयामासमुदायशोदागो
॥ विंद० ॥ १० ॥ क्रीडंतमंतव्रजमात्मा
॥ जंस्वंसमंवयस्यैः पशुपालवा
॥ लैः ॥ प्रेमगायशोदोपजुहाव

२
॥ कृष्णगोविंदं ॥ ११ ॥ यशोदयागा
॥ ठमुल्लखलेन गोकंठपाशेन नि
॥ बध्यमानं ॥ रुरोदमंदं नवनीतवौ
॥ रंगोविंदं ॥ १२ ॥ निजांगणे कंक
॥ णकेलिलोलंगोपीग्रहीत्वानव
॥ नीतगोलं ॥ संमर्दयत्याणितले
॥ नगोपीगोविंदं ॥ १३ ॥ ग्रहेग्रहे
॥ गोपवधूकदंबाः सर्वमिलित्वा
॥ समवाययोगे ॥ पुण्यानिनामानि
॥ पठन्ति नित्यं गोविंदं ॥ १४ ॥ मंदार
॥ मूले वदनाभिरामं बिंबाधरापू
॥ रितवेदेषु नादं ॥ गोगोपगोपी

॥ जनमध्यसंस्थं गोविंदं ॥ १५ ॥ उ
॥ त्थाय गोप्यो पररात्रिभागे स्मृत्वा
॥ यशोदासुतबालकेलिं ॥ गायंति
॥ काले दधिमंथयंत्यो गोविंदं ॥ १६ ॥
॥ जग्धोत्थदत्तेन वनीतपिंडो गृहे
॥ यशोदा विचिकित्सयैति ॥ उवाच स
॥ संवदहे मुरारे गोवि ॥ १७ ॥ अम्य
॥ च्यं गेहं युवती प्रवृद्धं प्रेमप्रवाहा
॥ दधिनिर्ममंथ ॥ उद्गायती गोप
॥ वधू समस्ता गो ॥ १८ ॥ क्वचिद्भ्रा
॥ ते दधिपूर्णपात्रे निषिच्य मंथं यु
॥ वली मुकुंदं ॥ आलोकय गानं विवि
॥ धं करोति ॥ गोविं ॥ १९ ॥ क्रीडाप
॥ रं भोजनमञ्जनार्थं हिते विष्णी

॥ स्त्रीलनुजं यशोदा^३ ॥ अजो हवीलेम
॥ परिप्लुताक्षी ॥ गोविंद० ॥ २० ॥ विहा
॥ यनिद्रामरुणोदये च विहाय हृत्या
॥ निचविप्रसुरव्याः ॥ वेदावसाने प्र
॥ पठंति नित्यं गोविं० ॥ २१ ॥ सुरवा
॥ शयाने तिलयेन विष्णो देवर्षिमा
॥ द्यमुनयः प्रपन्नाः ॥ तेनाच्युतं त
॥ न्मयतां न्रजंति गोवि० ॥ २२ ॥ वृंदा
॥ वने गोपगणः सगोपी विलोक्य
॥ गोविंदवियोगखिन्नाः ॥ राधाप्र
॥ फुल्लोत्पललोचनाभ्यां गोविंद०
॥ २३ ॥ प्रभातसंचारगतानुगावस्तद्र
॥ क्षणार्थं तनयं यशोदा ॥ प्राबोधय
॥ त्याणितलेन मंदं गोविंद० ॥ २४ ॥

॥ प्रबालशोभा इव दीर्घकेशा वातांबु
॥ पुष्पांशानपूतदेहाः ॥ मूलतरुणा
॥ मुनयः पठन्ति गोविंदं ॥ २५ ॥ एवं ब्रु
॥ वाणा विरहातुरा भृशं ब्रजस्त्रियः क
॥ स्मविषक्तमानसाः ॥ विसृज्य लज्जां
॥ रुरुदुःसुखरंगो विंद ॥ २६ ॥ गोपी
॥ कदाचित्मणिपंजरस्थं शुक्लं वचो
॥ वाचयितुं प्रवृत्ता ॥ कंदर्पतापे
॥ तियदा करोति गोवि ॥ २७ ॥ गोव
॥ सवालैः शिशुकाकपक्षं बध्नंत
॥ मंभोजदलायताक्षं ॥ उवाच मो
॥ हाञ्चिबुक्कं गृहीत्वा गोविं ॥ २८ ॥
॥ प्रभातकाले वरबल्लुबोधा गोर
॥ क्षणार्थं धृतचेत्रदंतं ॥ आकारया

४

कंद

॥ मधुरनंतमाद्यं गोवि॥ २८ ॥
 ॥ जलाशयेकालियमर्दनाय यदा
 ॥ बादपतन्मुरारिः ॥ गोपांगणाश्च
 ॥ कुशुरेस्य गोपी गोविंद॥ ३० ॥
 ॥ सरोवरेकालियनागबंधं शिशुं
 ॥ यत्रोदातनयं निशम्य ॥ क्रोशु
 ॥ लुठंत्यः पथि गोपबाला गोवि
 ॥ ३१ ॥ अक्रूरमासाद्य यदा
 ॥ मुकुंदश्चापोत्सवार्थं मथुरां प्र
 ॥ विष्टः ॥ तदा स पौरैर्जित्वा
 ॥ यतीत्यभाषे गोविं॥ ३२ ॥ कंस
 ॥ स्य दूरेण यदैव नीते वृंदावनांते व
 ॥ सुदैवसूनौ ॥ सरोदगोपी भवनस्य
 ॥ मध्ये गोविंद॥ ३३ ॥ अक्रूरयुक्तं य

॥ दुवंशनाथसंगद्यमानं मथुरां नि
॥ रीक्ष्य ॥ उचुर्वियोगा किल गोपबा
॥ लागोविदं ॥ ३४ ॥ ~~कुरु~~ चक्रंदगोपी
॥ नलिनीवनंते हस्तेन हीनाकुसुमे
॥ शयाना ॥ अफुल्लनीलोत्पललोच
॥ नाद्यागोविदं ॥ ३५ ॥ मातापितृभ्यां
॥ परिवार्यमाना गुहां प्रविष्टा विला
॥ लापगोपी ॥ आगत्य मां पालय विश्व
॥ नाथगोविदं ॥ ३६ ॥ वृंदावनस्थं ह
॥ रिमाशुबुद्धा गोपीगता कापिव
॥ नं निश्रयां ॥ तत्राप्यदृष्टाति भ
॥ यादवोचद्वेवि ॥ ३७ ॥ सुखं रा
॥ यानं नित्ये निजे पिनामानि वि
॥ द्मोः प्रवर्तते मर्त्यः ॥ ते निश्चितं त

॥ नमयतां ब्रजंति गोविंदं ॥ ३६ ॥ सा
॥ नीरजाक्षी भव लोक्य राधा सरो
॥ दगोविंद वियोग रिवन्तां ॥ ३७ ॥
॥ रत्न पुल्लोत्पललोचनाभ्यां गोविं
॥ दं ॥ ३८ ॥ जिह्वे रसशे मुधुरधि
॥ यात्वं सत्यं हि तं त्वां परमं वदामि ॥
॥ आवन्त यै धामधुराक्षराणि गो
॥ वि ॥ ३९ ॥ अत्यंतिकं व्याधि हरं
॥ जनानां चिकित्सकं वेदविदो व
॥ दंति ॥ संसारतापत्रयनाशबी
॥ जं गोविंदं ॥ ४० ॥ ताता जयागध
॥ तिरामभद्रे सलक्ष्मणे रण्य चये
॥ ससीते ॥ चक्रंदरामस्य निजाज

॥ नित्रीगोविदं॥४२॥ एकाकिनीदंड
॥ ककाननांतात्सानीयमानादराकं
॥ धरेण॥ सीतातदा कंददनन्यमाथा
॥ गोविदं॥४३॥ रामारियुक्ताजनका
॥ त्मजायाविचितयंतीहृदिरामरूपं॥
॥ रुरोदसीतारघुनाथपाहिगोविदं॥
॥ प्रसीदविस्मोरघुवंशनाथसुरासुरा^{॥४४॥}
॥ णांसुरवदुःखहेतो॥ रुरोदसीतानु
॥ समुद्रमध्येगोविदं॥४५॥ अंतर्जले
॥ ग्राहगृहीतपादोविस्मृष्टविलिन्न
॥ समस्तबंधुः॥ तदागजेन्द्रो नितरांज
॥ गादगोविदं॥४६॥ हंसध्वजोशंखह
॥ तोददरीपुत्रंकटहप्रतपंतमेनं॥
॥ पुण्यानिनामानिहरेर्जपंतगोविदं॥४७॥

६
॥ दुर्वासनाकं परिग्रह्य कृत्वा साक्षात्
॥ किं ताका ननवा सिनीशं ॥ अंतः प्र
॥ विद्यामनसा जुहाव गोविंदं ॥ ४६ ॥
॥ ध्येयं सदा योगिभिरप्रमेयं चिंताहरं
॥ चिंतित पारिजातं ॥ कस्तूरिका क
॥ लिप्त नीलवर्णं गोविंदं ॥ ४७ ॥ संसा
॥ रकूपे पतितोऽस्य गाधे मोहं धूपूर्णं वि
॥ षया तितप्रे ॥ करावलंबं मम देहि
॥ विष्णो गोविंदं ॥ ४८ ॥ त्वामेव याचे
॥ मम देहि जिह्वे समागते दंडधरे क
॥ तांते ॥ वक्तव्यमेवं मधुरं भवं त्यागो
॥ विंदं ॥ ४९ ॥ भजस्व मंत्रं भवबंधमु
॥ त्वै जिह्वे रसजे सुलभं मनोज्ञं ॥ ५० ॥

॥ पायनाद्यैर्मुनिभिः प्रजप्यं गोविंदं ॥
॥ ५३ ॥ जिह्वे सदैवं प्रजसुंदराणि ना
॥ मानि क्लृप्तस्य मनोहराणि ॥ गोविंदं
॥ केशवमुकुंदहरे मुरारे लक्ष्मीनि ॥ वा
॥ समधुसूदनमाधवेति ॥ ५३ ॥ गोविं
॥ दं गोविंदं हरे मुरारे गोविंदं गोविंदं
॥ मुकुंदकृष्णः ॥ गोविंदं गोविंदं रथांग
॥ राणे गोविंदं ॥ ५४ ॥ त्वामेव याचेम
॥ मदेही जिह्वे प्राप्नोयदामायमदंडका
॥ लभूः ॥ वक्तव्यमेवं मधुरं च भक्त्या गो
॥ विंदं ॥ ५५ ॥ सुखावसाने इदमेव सा
॥ ५६ ॥ सुखावसाने इदमेव गेयं ॥ देहाव
॥ इदमेव जाप्यं गोविंदं ॥ ५६ ॥ ॥

॥ विंदेति मुकुंदेति जपजिह्वे निरं
तरै ॥ नो स्मरसि हे मूढे संसारार्थं
वनौ हरिः ॥ ५७ ॥ इति श्री बिल्वमंग
लकृतं गोविंददामोदरस्तोत्रं संपू
र्णं ॥ श्रीगोपाकृतं स्तुतिं ॥ ५८ ॥

श्रीमाहाकालि ॥

॥ सर्वस्वरूपेशो सर्वशक्तिसमन्वि
तः ॥ भयभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि
॥ नमोस्तुते ॥ ५९ ॥